## दिनांक 16 जनवरी, 1984

सं ग्री॰ वि॰ जी.जी.एन./146-83/2636. - पूंकि हरियाणा केराज्यपाल, की राय है कि मैं॰ एडवान्स डायन्मिन्स डूड हेड़ा गुड़गांव, के श्रमिक श्री किशन पत्त तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीग्रोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछतीय समझते है;

इसलिए, श्रव, श्रीचोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गईं शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निविध्ट करने हैं, जो कि उक्त प्रवश्वकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है:--

क्या श्री किसन पाल की सेत्राओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं .श्रौ.वि./जी.जी.एत./105-83/2662. —चूंकि हरियाणा के राज्ययाल की राय है कि मैं० श्रार. श्रार. इन्जीनियरिंग वर्कस खाण्डसा रोड़, लक्षमी गार्डन गुड़गांव, के श्रमिक श्री राज कुमार तथा उसके प्रवन्सकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालचे, फरीदावाद को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय के लिए निर्दिण्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक क बीचे या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राज कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्री वि /एफ.डी /33 3-83/2669 — चूंकि राज्यपाल हरियाणा की राय है कि मैं ० प्रेम मैंटल इन्डस्ट्रींज सैक्टर-24, एन.आई.टी.फरीदाबाद, के श्रमिक श्री रमन लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई प्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद के न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7(क) के ग्रिधीन ग्रौद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री रमन लाल की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्री.वि./एफ.डी./96-83/2676. - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज ग्रह्ला इण्डस्ट्रीज, 12/6, मयूरा रोड, गुरुकुल इन्द्राप्रस्त, पोस्ट अमर नगर, -फरीदाबाद, के श्रामिक श्री विजेन्द्र सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

धीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, प्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिविवियम, 1947, की घारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्याल इसके द्वारा सरकारी श्रिविस्विना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रविस्विना सं. 11495-श्रो-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिविवयम की घारा 7 के प्रजीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदाबाद, को विवादयस्त्र या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानणय के तिए निर्दिब्द करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री विजेन्द्र सिंह की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?